Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

ग्रामीण अर्थव्यवस्थामें महिलाओं की भूमिका का अध्ययन (मध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ में)

डॉ. राकेश कुमार दिलावरे*

* सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) शहीद भगतसिंह शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पिपरिया (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। वे न केवल कृषि से संबंधित क्षेत्रों में काम करती हैं, बल्कि घरेलू कामकाज और बच्चों की देखभाल भी करती हैं। ग्रामीण महिलाएं प्राय: परिवार के लिए भोजन और पानी जुटाने, लकड़ी इकट्ठा करने और अन्य आवश्यक कार्यों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, साथ ही साथ धन कमाने वाले कार्यो में भी परिवार का सहयोग करती हैं, जिससे परिवार आर्थिक रूप से भी सक्षम होता है।

मध्य प्रदेश की अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का योगदान बढ़ता जा रहा है, जो महिलाए कृषि कार्य में संलग्न नहीं है, वह अपने घर पर ही पापड़ बनाना, बॉस का सामान बनाना, मिट्टी का सामान बनाना आदि कार्यो में संलग्न होकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बना रही हैं।

प्रस्तावना – ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान होती हैं, और कृषि कार्यो में पुरूषो के समान महिलाओं की भी बराबर की भागेदारी होती हैं। अधिकांश कृषि कार्य ऐसे होते हैं जिन्हें केवल महिलाएं बड़ी आसानी से कर पाती हैं। ग्रामीण परिवारों में पुरूष, कृषि से ज्यादा बाहरी कार्य करते हैं, जिससे परिवार के रोजाना के खर्चे चलते हैं, और महिलाएं घर का कार्य करने के बाद, खेत चली हैं एवं खेती के कार्य करती हैं। ग्रामीण परिवार जो कृषि कार्य नहीं करते हैं उनके परिवार की महिलाए ग्रामीण स्तर पर चलने वाले कुटीर उद्योग जैसे– पापड़ बनाना, बॉस का सामान बनाना, मिटटी का सामान बनाना आदि कार्यो में संलग्न होती हैं।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में, महिलाओं का अहम रोल हैं, घर के कार्यो से लेकर, कृषि कार्य, डेरी उद्योग, रेशम उद्योग, मुर्गी फार्मिंग, मत्स्य उद्योग, बागवानी, वेजिटेबल फार्मिंग, नर्सरी फार्मिंग,लघु एवं कुटीर,सभी क्षेत्रों में महिलाएं बढ़चढ़कर काम कर रही हैं। ग्रामीण महिलाएं ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। उनका सशक्तिकरण, समग्र ग्रामीण विकास के लिए आवश्यक है। सरकार और गैर–सरकारी संगठनों को ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए और अधिक प्रयास करने चाहिए, ताकि वे अपनी पूरी क्षमता का एहसास कर सकें और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में और अधिक योगदान दे सकें।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं का योगदान–ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। वे न केवल कृषि और संबंधित क्षेत्रों में काम करती हैं, बल्कि घरेलू कामकाज और बच्चों की देखभाल भी करती हैं। ग्रामीण महिलाएं अक्सर परिवार के लिए भोजन और पानी जुटाने, लकड़ी इकट्ठा करने तथा अन्य आवश्यक कार्यों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे आवश्यक कार्य निम्नवत है–

1. **कृषि –** ग्रामीण महिलाएं खेती, पशुपालन, और बागवानी जैसे कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे फसलों की बुवाई, कटाई, और सिंचाई जैसे कार्यों में भी सक्रिय रूप से शामिल होती हैं।
2. **छोटे व्यवसाय –** कई ग्रामीण महिलाएं छोटे व्यवसायों जैसे कि हस्तशिल्प, सिलाई, कढ़ाई, और खाद्य प्रसंस्करण में भी काम करती हैं।
3. **गैर–कृषि कार्य –** महिलाएं गैर–कृषि कार्यों जैसे कि निर्माण, परिवहन, और पर्यटन में भी काम करती हैं।
4. **घरेलू देखभाल –** ग्रामीण महिलाएं अपने परिवारों के लिए भोजन, पानी, और ईंधन की व्यवस्था करने, बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल करने, और घर चलाने जैसे महत्वपूर्ण कार्य करती हैं।
5. **समुदाय –** ग्रामीण महिलाएं सामुदायिक विकास में भी सक्रिय रूप से भाग लेती हैं, जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य, और स्वच्छता जैसे मुद्दों पर काम करना।
6. **पशुपालन–** ग्रामीण महिलाएं अक्सर पशुधन की देखभाल करती हैं, जैसे कि गाय, बकरी, और मुर्गी। वे दूध, अंडे, और अन्य पशुधन उत्पादों का उत्पादन करती हैं, जो उनके घरों और समुदायों के लिए आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं के भूमिका को जानना।
2. ग्रामीण अर्थव्यवस्थामें महिलाओं के कार्य क्षेत्र को जानना।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था की पृष्ठभूमि – ग्रामीण अर्थव्यवस्था एक ऐसी अर्थव्यवस्था हैं जिसमेंग्रामीण अंचल से जुडे सभी काम–काज एवं व्यवसाय शामिल है, जो गाँवो में रहने वाले लोगों के रोजगार के साधन होते हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कुछ लोग खेती करते है, कुछ मजदूरी तो कुछ छोटे व्यापारी होते हैं, जो कृषि से जुड़े हुए व्यापार व व्यवसाय करते हैं। सरल शब्दों में कहे तो ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि के आसपास घुमती रहती हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में जो व्यवसायी वर्ग जुडा है, वह गाँवों को शहरो से जोड़ते हैं एवं ग्रामीणों की समस्त अवश्यकताओं की वस्तुओं को उपलब्ध करवाते हैं।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था गाँवो से जुडी समस्त आर्थिक क्रियाओं को दर्शाती हैं इसमे रोजगार के साथ-साथ वे समस्त गतिविधियां शामिल होती हैं जो रोजगार एवं व्यापार व्यवसाय से जुड़ी होती हैं। ग्रामीण स्तर पर लोग छोटे-छोटे रोजगारो एवं कृषि कार्यो से जुडे होते हैं, यदि उनको वर्ष भर कार्य न मिले तो उन्हे अपनी अजीविका चलाने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता हैं।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं को होने वाली समस्याए – ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिनमें गरीबी, शिक्षा की कमी, स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, और सामाजिक भेदभाव शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, उन्हें घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न, और कार्यस्थल पर उत्पीड़न जैसी समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं के सम्मुख मुख्य रूप से निम्न लिखित समस्यायें आती हैं-

1. **गरीबी-**ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी एक प्रमुख समस्या है, जिसके कारण महिलाओं को आवश्यक सुविधाओं और संसाधनों तक पहुंचने में कठिनाई होती है, और वे पिछड़ती चली जाती है, बच्चें और परिवार अच्छी सुविधाओं से वंचित रह जाते है।
2. **शिक्षा की कमी-**ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की पहुंच कम है, और महिलाओं को कई समाजो में पढ़ाया भी नहीं जाता है, जिसके कारण महिलाओं को शिक्षा और कौशल विकास के अवसरों से वंचित रहना पड़ता है।
3. **स्वास्थ्य सेवाओं की कमी-**ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी है, जिसके कारण महिलाओं को उचित चिकित्सा देखभाल और प्रसूति सेवाओं तक पहुंचने में कठिनाई होती है।
4. **सामाजिक भेदभाव-**ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को सामाजिक भेदभाव का सामना करना पड़ता है, जैसे कि दहेज प्रथा, बाल विवाह, और सम्मान के नाम पर हत्याएं।
5. **घरेलू हिंसा और यौन उत्पीड़न-**ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को घरेलू हिंसा और यौन उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है, जिससे उन्हें शारीरिक और मानसिक रूप से नुकसान होता है।
6. **कार्यस्थल पर उत्पीड़न-**ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को कार्यस्थल पर उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है, जिससे उन्हें काम करने में कठिनाई होती है।
7. **वित्तीय बहिष्कार-**ग्रामीण महिलाओं को अक्सर वित्तीय संस्थानों और सेवाओं तक पहुंचने में कठिनाई होती है, जिससे उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने में बाधा आती है।
8. **सीमित सामाजिक गतिशीलता-**ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को सामाजिक रूप से आगे बढ़ने और निर्णय लेने में सीमित अवसर मिलते हैं।
9. **कानूनी अधिकारों की जानकारी का अभाव-**ग्रामीण महिलाओं को अपने कानूनी अधिकारों की जानकारी नहीं होती है, जिससे वे अपने अधिकारों की रक्षा करने में असमर्थ होती हैं।

समस्याओं का समाधान-ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं को होने वाली समस्याओं के समाधान निम्न प्रकार है:

1. महिलाओं को गरीबी से निकालने के लिए, उन्हे लघु एवं कुटीर उद्योगों से जोड़ना होगा ताकि उन्हें पर्याप्त रोजगार के अवसर मिल सके।
2. शिक्षा के क्षेत्र में भी महिलाओं को पढ़ने के लिए बराबर का हक मिलना चाहिए, ताकि महिलाए शिक्षित होकर रोजगार के क्षेत्र में अपनी भूमिका निभा सके।
3. पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं को स्वास्थय सम्बन्धी समस्याए अधिक होती हैं, अत: महिलाओं को विशेष स्वास्थ्य सुविधाए उपलब्ध होनी चाहिए, ताकि महिलाएं भी स्वस्थ शरीर के साथ, परिवार को रोजगार के क्षेत्र में सहयोग कर सकें।
4. सामाजिक भेदभाव को खत्म करने के लिए महिला सशक्तिकरणके क्षेत्र में शासन एवं गैर सरकारी संगठनों के तेजी से काम करने की अवश्यकता है, ताकि ग्रामीण स्तर तक सामाजिक भेदभाव को समाप्त किया जा सके।
5. महिलाओं को घरेलू हिंसा और यौन उत्पीड़न जैसी समस्याओं से निपटने के लिए पुलिस थाने, गैर सरकारी संगठन एवं और भी शासकीय महिला उत्पीड़न निवारण संस्थान हैजिसमें जाकर महिला अपनी शिकायत दर्ज करवा सकती है।
6. कार्यस्थल पर उत्पीड़न महिलाओं के लिए एक प्रमुख समस्या है, जिसके चलते कई महिलाए अपना काम छोड़ देती हैं, शासन के द्वारा शासकीय एवं निजी संस्थानों में महिला उत्पीड़न केन्द्र बनाये गये हैं, महिला वहां अपनी शिकायत दर्ज कर, समस्या का समाधान कर सकती है।

निष्कर्ष-ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं का अहम रोल हैं, घर के कार्यो से लेकर, कृषि कार्य, लघु एवं कुटीर उद्योग, सभी क्षेत्रो में महिलाएं बढ़ चढ़कर काम कर रही हैं। ग्रामीण स्तर की महिलाएं अपने घर परिवार को चलाने के लिए पुरूषों के साथ मिलकर आर्थिक रूप से सहयोग करती है। ग्रामीण महिलाओं का रोल कृषि क्षेत्र के विकास में सराहनीय है, इनके सहयोग के कारण ही मध्य प्रदेश की अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का योगदान बढ़ता जा रहा है, जो महिलाए कृषि कार्य में संलग्न नहीं है, वह, अपने घर पर ही पापड़ बनाना, बाँस का सामान बनाना, मिटटी का सामान बनाना आदि कार्यो में संलग्न होकर, ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बना रही है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में, महिलाओं की भूमिका जिन भी राज्यों में अच्छी हैं, वह राज्य आर्थिक रूप से समृद्ध होते जा रहे है, इससे ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं का आत्म विश्वास बढ़ रहा हैं और वह अच्छा कार्य कर परिवार को सहयोग कर रही है, और साथ ही अपने बच्चों को आगे बढ़ाने मे सफल सहयोग प्रदान कर रही है।

संदर्भ एवं ग्रथ सूची :-

1. कुमार.विनोद,'भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं रोजगार: समस्या एवं समाधान', श्रंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका(2018) वॉल-5.अंक-11.पेज 104-109.
2. कुमार.योगेश,'ग्रामीण क्षेत्र में प्रगतिशील अर्थव्यवस्था से बदलता परिवेश', कुरुक्षेत्र पत्रिका(2009) अंक-12,पेज. 3-8.
3. डॉ. मोदी. अनिता. 'ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में महिलाओं का योगदान', कुरुक्षेत्र पत्रिका(2009) अंक-12,पेज. 28-32.
4. दुबे.वेद प्रकाश एवं चतुर्वेदी. प्रो. एस.एन. 'ग्रामीण अर्थव्यवस्था में रेशम उद्योग की सहभागिता', कुरुक्षेत्र पत्रिका(2009) अंक-12,पेज. 24-27.

****